नाम- डॉ. प्रदीप कुमार राय (एसोसिएट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम)
विषय- राजनीतिशास्त्र
कक्षा- बी.ए. (प्रतिष्ठा) भाग-01, सत्र- 2019-20
पेपर- 01
दिनांक- 08.07.2020
टॉपिक- मार्क्स के पूंजीवादी व्यवस्था संबंधी धारणा-

मार्क्स ने पूंजीवादी व्यवस्था पर व्यापक चिंतन करते हुये इस संबंध में निम्न विचार दिये हैं-

(1.) पूंजी के केन्द्रीकरण का सिद्धांत- पूंजीवादी व्यवस्था में अतिरिक्त मूल्य के कारण जो आंतरिक पूंजी बढ़ती है वह नयी पूंजी में परिवर्तित हो जाती है उससे बड़े उद्योगों को अधिक लाभ होता है जिससे छोटे और मध्यम उद्योगों में निर्मित वस्तुओं की तुलना में बड़े उद्योगों में उत्पादित वस्तुओं का लागत मूल्य कम जाता है। इससे इनकी पूंजी और बढ़ जाती है और पूंजी का केन्द्रीकरण होने लगता है।

(2.) श्रमिक वर्ग की निरंतर बढ़नेवाली निर्धनता और कष्टों का सिद्धांत- इस व्यवस्था में श्रमिक वर्ग की निर्धनता, कष्ट में वृद्धि के साथ साथ मशीनीकरण बढ़ने से बेकारी भी बढ़ती है। प्रतियोगी अवस्था में श्रमिकों की मजदूरी में भी कमी आ जाती है। उनके जीवन में शोषण, संताप बढ़ता है परिणामत: उनका असंतोष और उग्र होता जाता है।

(3.) आर्थिक संकटों की पुनरावृत्ति का सिद्धांत- मार्क्स के अनुसार पूंजीवादी व्यवस्था में कभी-कभी अतिउत्पादन के परिणाम स्वरूप कारखानों के बंद होने की नौबत आ जाती है जिसका दुष्परिणाम श्रमिकों को भी भुगतना पड़ता है और उनके समक्ष भुखमरी और बेकारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

(4.) पूंजीवाद के अंत की अवश्यम्भावना का सिद्धांत- पूंजीवादी व्यवस्था के इस विश्लेषण के आधार पर मार्क्स इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि पूंजीवाद का अंत अवश्यम्भावी है। सामाजिक विकास के जिन नियमों के अनुसार आदिम साम्यवाद, दास-व्यवस्था और सामंती व्यवस्था का नाश हुआ वे ही नियम पूंजीवाद के मूल में काम करते हैं और उसका भी अंत अवश्यम्भावी है। उद्योगों का स्वामीकरण, पूंजीपतियों द्वारा अपनी वस्तु और कारोबार का बाजार बनाने की इच्छा, उद्योगों का केन्द्रीकरण के परिणामस्वरूप

श्रमिकों के संगठन एवं एकता में आसानी आती है और पूंजीपति शोषक विरोध आसान हो जाता है। श्रमिकों की समान समस्या एवं स्थिति से मिलकर व्यापी संगठन का निर्माण हो जाता है और उनके विरुद्ध विद्रोह आसान हो जाता है और तब वे पूंजीवाद को समाप्त कर उनके स्थान पर श्रमिक वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना कर लेते हैं।

आलोचना:- मार्क्स के पूंजीवादी व्यवस्था का विश्लेषण निम्न आधारों पर आलोचना की गई है –

(1.) मार्क्स का यह विचार कि पूंजीवादी व्यवस्था की भीषण प्रतियोगिता के परिणामस्वरूप मध्यम श्रेणी के और छोटे पूंजीपति समाप्त हो जायेंगे असत्य सिद्ध हुई है। 21वीं सदी के अभी तक संयुक्त पूंजी कंपनियों का अस्तित्व कायम है जिसमें बड़े और छोटे पूंजीपति साथ-साथ हैं।

(2.) मार्क्स का विचार कि पूंजीवादी व्यवस्था के परिणामस्वरूप श्रमिक वर्ग की निर्धनता और शोषण और कष्ट बढ़ेंगे भी गलत सिद्ध हुई है पूंजीवादी और औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों में श्रमिकों की सुख-सुविधा में व्यापक सुधार हुआ है। लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को अपनाकर भी सहूलियत और साधन बढ़ाये गये हैं।

(3.) मार्क्स की यह भविष्यवाणी कि औद्योगिक तथा तकनीकी ज्ञान के विकास से सर्वहारा वर्ग के सदस्यों की संख्या में वृद्धि होगी सत्य सिद्ध नहीं हो सकी हुई है। सर्वहारा वर्ग के सदस्यों की संख्या में वृद्धि होने के स्थान पर कमी आई है। मध्यम वर्ग का महत्त्व एवं संख्या में वृद्धि हुई है।

(4.) मार्क्स ने पूंजीवादी व्यवस्था में आर्थिक संकटों के पुनरावृत्ति की बात कही गई है किंतु सच्चाई यह है कि 1929-30 के आर्थिक संकट के बाद अब तक इस प्रकार का कोई आर्थिक संकट नहीं आया है क्योंकि पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा अपने स्वरूप में सकारात्मक परिवर्तन किये जाने के कारण आर्थिक संकटों की आशंका कम हुई है।

(5.) पूंजीवादी व्यवस्था के पूर्ण पतन की कही गई बात भी गलत सिद्ध हुई है क्योंकि पूंजीवाद ने अपने आप को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार ढाला है और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना की कोई संभावना नहीं दिखती।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद हम कह सकते हैं कि मार्क्स के पूंजीवादी व्यवस्था संबंधी धारणाओं के परिणामस्वरूप आंदोलनकर श्रमिक उत्थान नियम, लोक कल्याणकारी राज्य अवधारणा को बल मिला इसीलिये इसे महत्त्वपूर्ण सुधारवादी विचारधारा का नाम दिया गया है।

Scanned with CamScanner